5 - fair paper   3 - Rough paper

विषय : कब तक इंतजार करूँ...

दोहरा मापदंड

उस दिन वनिता विंग में मुझ को ही मेथन आया था। एक अकेली सिपाही माँ होने से मुझे निराशा थी, पर साथ ही साथ गर्व भी। मेरी बेटी अपनी सात साल के भोलेपन से उत्तर पर लिखा था "हॅपी फादर्स डे, मेरी प्यारी माँ"। उसकी यह छोटी सी बात मेरी दिल को ज़ोर से दर्द करने को मजबूर किया। और जो बाते मैं भूलना चाहती थी, उसे फिर मेरी चिंता की भाग बना दिया।

उस रात... ओह! उसके बारे में न सोचना ही ठीक रहेगा। मेरी जान और उसकी पापा... अरे मुझे यह क्या हो रहा है? अचानक मेरी सीने पर इतनी तनाव क्यूँ महसूस होने लगी? मेरी माथे से गंगा-जमुना जैसे पसीना क्यूँ बह रही है। इस ठण्ड के मौसम में भी मेरी बदन पसीने से भीग क्यूँ रही है। हाँ! मैं भूल गई थी। उस दिन के संभावना यानी मेरी हाई बी.पी को शांत करना।

हमारी रिश्ता बहुत मज़बूत थी। उसके कारण ही वह मेरी "जोब ऑफर" को मना नहीं किया। ईरान में

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

एक आसपताल मे मुझे एक काम मिला जल्दी ही हमारा परिवार यानी हम तीनों (उनके अलावा कोई नही थीं मुझे, परिवार कहने केलिए) पर उस 'जोब ऑफर' ने मेरी सारी सपनो को जिंदा मार दिया। उस जो समय ईरान मे दंगे चल रही थी। आतंकवादियों ने हर जगह शोर, लूट-मार बनाया रखा था। एक इसलाम न होने की बावजूद भी मुझे हिजाब पहनना पडा। पर उसमें मुझे कोई दिक्कत नही थी।

हर इंसान नेक लगता था, मुझे। पर उस दिन वह सैर सफारी से मेरी वह सोच बिल्कुल पलट गया। ईरान की कई प्रसिद्ध जगहों मे आतंकवादियों ने बम विस्फोट कर दिया था।

देर होने की कारण सेकंड क्लास डिब्बे मे जाना पड़ा, हमें। घर मे बैठ-बैठे प्रसादजी और तीन साल की मीना 'बोर' हो रहे थे। इसलिए उस दिन सैर सफारी केलिए चला, ... पर...। एक हरा कुर्ता पहने, लम्बे दाडी और हट्टे-कट्टे वाला एक शख्स अचानक से डिब्बे मे चढ गया। आश्चर्य की बात यह है कि उस दिन हम चारों के अलावा डिब्बे मे कोई भी नही थी,

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023
Kozhikode

Item Code: 952 Participant Code: 111

एक पुलिसवाला तक। वह शख्स बार-बार हमें घूर रहा था। प्रसाद जी ने एक बार चोर-निगाहों से उसे देखा वह बहुत घबराया हुआ लग रहा था।

आस्पताल से सीधा गाड़ी में आने की वजह से हिजाब मैंने पहन रखी थी। और नीना को मुझे दिन में कुछ घंटे ही देखने को मिलती थी। इसलिए वह मेरी हाथ को कसकर पकड़े हुए लेट रही थी। ये शख्स अचानक उसके बैग से एक जाली-वाली सफेद टोपी बाहर निकाला। शाम का समय था, मुझे लगा कि वह निश्कार करने की तैयारी कर रहा था। पर... उसने अपना सिर उठाकर ऊपर की ओर देखा और उसकी आँखें बंद किया।

प्रसादजी अपने सीट से उठकर 'वाश रूम' की ओर चल पड़ा। उसे देख यहा मजबूत कद-काठी का शख्स अपने लम्बे दाढ़ी की हाथों से पकड़कर उसका बैग लेते हुए उसके पीछे चला। और फिर एक गोली मारने की आवाज़ आई और नीना को सीट पर लेटाकर मैं देखा तक उस दाढ़ी-वाला शख्स के हाथ में 'ए.के 47 बंदूक' थी। मुझे देखते ही "यह तुमको तुम्हारे लिए

(47)

(Note: Graded Items may be published in Schoolwki. So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

हराम है, इसके साथ जीना हराम है, यह इलजाम नहीं" मेरी दिल बैठ गया। खून में डूबे उनकी शरीर अब भी मेरी आँखों के सामने फड़फड़ा रहा है। उसे देख मुझे ज़ोर से चीख़ने को की मन हुआ, पर आवाज़ नहीं आ रही थी। अंधेरा भा मक्खियाँ मक्खियाँ के तरह मेरी आँखों के सामने भिनभिना रहे थे। स्टेशन पहुँचने पर गाड़ी रुका पर हमारी यादों और कल की यादों की गाडी तेज़ी से मेरी भीतर से गुज़र रही थी। क्या कल से मेरी परिवार एक 'फ्रेम्ड फोटो' मे ही खुश देखने को मिलेगा? अकेली माँ बनकर मैं कैसे नीना को संभाल पाएगा? पसीने से भींगे मैं रो रहा था। आँखों के की रोशनी अनजान जा रहा था। कल एक बड़ी प्रश्न चिन्ह के तरह मेरी सिर को मार-मार के तोड़ रहा था। उस रहस्य का शक्ल नरभोजी जानवरो की तरह मुझे घूर रहा था, वह भी मेरे मन में।

नीना, तीन साल की मासूम लड़की मैंने बताया हुआ झूठ यानी "पापा, बिसकुट लेने गये है". मानकर जीया। पर अब... पता था मुझे, एक न एक दिन पापा की असली अलविदा उसे पहच मालूम

होगा।

"वह किया इंतज़ार, कभी भी पूछा नहीं
मुझसे, "क्या अब पापा नहीं आएँगी"

पर इस मेथल से मेरी दिल फिर ज़ोर से मारना शुरू किया। पर अब भी उसे पापा की अलविदा का कारण पता नहीं। पता नहीं उसे, उसका पापा का हत्या उसकी मनपसंद बंदूक खिलोना ए.के 47 से हुआ। उसकी इंतज़ार जारी है... कब तक पता नहीं?

एक अकेली माँ होने की कारण मैं आसपताल और ईशान को अलविदा दिया। और दिखाने मेरी छोटी को उसकी माँ कितनी बहदुर है इसलिए मैं सैन्य में हिस्सा लिया।

सिर्फ और सिर्फ एक की प्रवृति से पूरी प्रदेश, पूरी विभाग को असर होता है। एक ही देश में एक इंसान को दो तरह यानी जाती के जारिए मूल्यों को नापने से देश ही नाश होता है।

"उस 'कांग्रेस डे' मेरे लिए पवित्र थी। प्रसाद जी ने इसे देख एक सितारे के रूप में आसमान पर टिमटिमा कर हँसा

ROUGH CANCELLED

61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023
Kozhikode

Item Code: 952 Participant Code: 111.

विषय : कब तक इंतज़ार करूँ... इस्लामी सिपाही का कहानी...

दोहरा मापदंड — हिजाब - वापा के स्थान भी माँ पर निर्भर थी।

उस दिन वनिता विंग में मुझे को ही मेयल आया था। एक अकेली सिपाही माँ होने से मुझे निराशा थी पर साथ ही साथ गर्व भी। मेरी बेटी अपनी सात साल के भोलेपन से लिखी थी कि "हमारी आदर्श है, मेरी प्यारी माँ"। उसकी यह छोटी सी बातें मेरी दिल को ज़ोर से दर्द करने को मजबूर किया। और जो बातें मैं भूलना चाहती थी उसे फिर सोच मेरी चिंता की आग बनाया।

उस रात... ओह! उसके बारे में ना सोचना ही ठीक रहेगा। मेरी जान और उसकी पापा... अरे मुझे यह क्या हो रहा है। अचानक मेरी सीने पर इतनी दर्द कहाँ से आई? मेरी माथे से गंगा - जमुना - जैसे पसीना क्यूँ बह रही है। इस ठण्ड के मौसम में भी मेरी बदन पसीने से भीग क्यूँ रही है। अहाँ! मैं भूल गया। उस दिन की संभावना यानी मेरी हाई बी.पी. को शांत करना।

हमारी रिश्ता बहुत मज़बूत थी। उसके कारण ही वह मेरी जोब ऑफर को मना नहीं किया। ईरान में एक

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

ROUGH. CANCELLED

61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023
Kozhikode

Item Code: 952 Participant Code: 111

आसपताल मे मुझे काम मिला जल्दी ही हम तीनों हमारा परिवार यानी हम तीनो (उनके अलावा कोई भी नही था मुझे, परिवार कहने केलिए) पर उस जोब ऑफर ने मेरी सारी सपनों को जिंदा मार दिया। उस समय इरान मे दंगे चल रही थी। आतंकवादियों ने हर जगह शोर, लूट-मार बनाया रखा था। एक इस्लाम न होने की बावजूद भी मुझे हिजाब पहनना पडा। पर इसमे मुझे कोई दिक्कत नही थी। हर इंसान नेक लगता था, मुझे। पर उस दिन वह रेल-सफारी से मेरी वह सोच बिलकुल पलट गया। ईरान की कई प्रसिद्ध जगहों मे आतंकवादियों ने बम विस्फोट कर दिया था।

देर होने की कारण हमें सेकंड क्लास डिब्बे मे जाना पडा। घर मे बैठे-बैठे प्रसादजी और नीना बोर हो रहे थे। इसलिए उस दिन रेल सफारी केलिए जाना पर... एक हरा कुर्ता पहने, लम्बे तगडे और हट्टे-कट्टे वाला एक शख्स अचानक से डिब्बे मे चढ गया। आश्चर्य की बात यह है कि उस दिन हम चारो के अलावा डिब्बे मे कोई भी नही थी, एक पुलिसवाला तक। वह बार-बार उस वह शख्स बार-बार हमें घूर रहा था। प्रसाद जी

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)

CANCELED

61st Kerala State School Kalolsavam - Jan 03 To 07, 2023

Kozhikode

Item Code: 952 Participant Code: 111

ने एक बार चोर निगाहों से उसे देखा वह बहुत घबराया
हुए लग रहा था। आसपताल से सीधा गाड़ी में आने की
वजह से हिजाब मैंने पहन रखी थी। और नीना को मुझे
दिन में कुछ घंटे ही देखने को मिलती थी। इसलिए वह
मेरी हाथ को कस कर पकड़े हुए लेट रही थी। वो शख्स
अचानक उसके बैग से एक जाली-वाली टोपी लेकर

(**Note**: Graded Items may be published in **Schoolwki.** So write neatly. Don't fold paper. Don't write overleaf)